विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय।

वर्ग दशम् बी,डी,एफ

दिनांक 02-11 -2021

विषय शिक्षिका -सरिता कुमारी

वर्ग- दशम् बी,डी,एफ

दिए गए पठन सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझे।

अट नहीं रही है (कविता)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

अट नहीं रही है

आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज (भाग 2)' में संकलित कविता 'अट नहीं रही है' से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी हैं। इस कविता में कवि ने फागुन मास की मनोहारी व मादक शोभा का सजीव चित्रण किया है।

भावार्थ : इस कविता में कवि ने वसंत ऋतु की सुंदरता का बखान किया है। वसंत ऋतु का आगमन हिंदी के फगुन महीने में होता है। ऐसे में फागुन की आभा इतनी अधिक है कि वह कहीं समा नहीं पा रही है।

कहीं साँस लेते हो,

घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,

आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज (भाग 2)' में संकलित कविता 'अट नहीं रही है' से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी हैं। इस कविता में कवि ने फागुन मास की मनोहारी व मादक शोभा का सजीव चित्रण किया है।

भावार्थ : वसंत जब साँस लेता है तो उसकी खुशबू से हर घर भर उठता है। कभी ऐसा लगता है कि बसंत आसमान में उड़ने के लिए अपने पंख फड़फड़ाता है। कवि उस सौंदर्य से अपनी आँखें हटाना चाहता है लेकिन उसकी आँखें हट नहीं रही हैं।

पत्तों से लदी डाल

कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद गंध पुष्प माल,
पाट-पाट शोभा श्री
पट नहीं रही है।

भावार्थ : पेड़ों पर नए पत्ते निकल आए हैं, जो कई रंगों के हैं। कहीं-कहीं पर कुछ पेड़ों के गले में लगता है कि भीनी-भीनी खुशबू देने वाले फूलों की माला लटकी हुई है। हर तरफ सुंदरता बिखरी पड़ी है और वह इतनी अधिक है कि धरा पर समा नहीं रही है।

वर्ग नवम

रीढ की हड्डी

प्रश्न -इस एकांकी की मुख्य नायिका आप किसे मानते हैं और क्यों?